लोनावाला (भारत)
दिसम्बर २४, २०००

सन्देश संख्या ३२

सत्य और विश्वास पद्धतियाँ

प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त इस अद्भुत स्थल पर क्रियायोग साधना की पुनरीक्षा में हमें अपनी इन बातों का अवलोकन करना चाहिए–

– अभिव्यक्ति अभिलाषा, आकांक्षा ।
– पूर्वानुमान, आशंका, उत्तेजना, गतिविधि, क्रोध, प्रतिरोध, अहंकार, आक्रमकता ।
– विचार, प्रवृत्ति, तनाव, त्रासदी, पीड़ा, विपत्ति, अशान्ति, घात–प्रतिघात, परम्परा एवं सत्य ।
– निराधार कल्पना, निष्कष, अनुबंधित प्रतिक्रिया, धूर्तता, भ्रम, निर्दयता और निर्ममता ।
– आदत, संस्कार, परिकल्पना, अर्धसत्य, अपेक्षा, पाखण्ड, हृदय की गति ।

सत्य अद्भुत समझदारी है। विश्वास पद्धतियाँ सामूहिक स्वीकार्यता पर आधारित एक प्रपंच हैं, एक सामाजिक घटना हैं, जो समूह, गुरू, पंथ, सम्प्रदाय, कट्टरता एवं युद्ध को जन्म देती हैं। अंधविश्वास का उदय सत्य का अस्त होना है। सत्य जीवन्त श्रद्धा है। सत्य का कोई पहचान चिन्ह नहीं होता । वह स्वयं ही अपनी पहचान है । दूसरी ओर, विश्वास–पद्धतियों के पास पहचान चिन्हों का ढेर है–––हिन्दू विश्वास–पद्धति, मुसलमान विश्वास–पद्धति, ईसाई विश्वास–पद्धति, आदि–आदि।

प्रेम के पास कोई नाम–पट्टिका नहीं होती, लेकिन पसन्द एवं नापसन्द, लगाव एवं विलगाव की होती है। प्रेम आसक्ति या लगाव नहीं है। सत्य विश्वास एवम् अविश्वास का विषय नहीं है। यह प्रत्यक्ष बोध का विषय है, उधारी वैचारिकीकरण का नहीं । विश्वास–पद्धति सुरक्षा एवं संघर्ष के लिये है। सत्य परम पावन एवं पूज्य है। विश्वास–पद्धति एक समुदाय की रचना करता है और उस पर प्रतिबंध लगाता है। सत्य, सही अर्थों में, आपको करुणा और धर्म से साक्षात्कार कराता है। विश्वास–पद्धतियाँ आपको विभेदकारी चित्तवृत्ति में बाँधकर रखती हैं। सत्य आपको परम चैतन्यमय होने के लिए मुक्त करता है। जब आप समझने लगते हैं कि किसी विश्वास–पद्धति में मात्र जन्म लेने के कारण आप उसकी बंधनकारी मान्यताओं को जीने के लिये विवश नहीं हैं, तभी आपके अन्दर वास्तविक धार्मिकता पैदा होती है। सच्ची धार्मिक जागरूकता किसी भी प्रकार के विश्वास–पद्धति पर आधारित नहीं होती है। सच्चा धर्म वह है, जिसे आप जीते हैं, जो सदैव आपके साथ होता है और जो आपको गतानुगतिक विश्वास–पद्धतियों, मताग्रहों तथा अन्धविश्वासों के बंधन–जाल को छिन्न–भिन्न कर बंधन–मुक्त करने में सहायक है।

परम्परा चित्तवृत्ति के भँवरजाल में फँसकर गतानुगतिकता का रूप ले लेती है। सत्य न तो सतत है और न ही असतत । सत्य गतिशील होने के साथ–साथ निश्चल भी है। यह अपनी गतिशीलता में निश्चल है और शाश्वतता की निश्चलता में भी गतिशील। सत्य का एक निश्चित निवास या निर्धारित अर्थ नहीं है। मिथ्या को मिथ्या की तरह देखते हुए इसे क्षण–प्रतिक्षण समझना होगा। जब विचार निरन्तरता की ओर प्रवृत्त होता है, सत्य उसकी निरन्तरता भंग कर देता है। विचारों के मध्य जो अन्तराल है उसी में 'अन्तर्यामी' का वास है।

सत्य न तो शाश्वत न क्षणभंगुर, न तो अनुभवगम्य न अनुभवातीत, न तो कम न अकम, न तो विवाद न समाधान, न तो निर्णय न कुनिर्णय, न तो ऐहिक न दैविक, न तो विखण्डन न पूर्णता, न तो विधेय न निषेध है। सत्य समस्त वर्गीकरणों, विकल्पों, विरोधी–युग्मों, किसी भी प्रकार की मोहग्रस्तता से परे है। यह समन्वय एवं सामंजस्य का सर्वोच्च स्वरूप है और यही क्रियायोग है। क्रियायोग एक मात्र ऐसी योग–पद्धति है, जिसमें अपने अस्तित्व में रहने की रहस्यमय प्रक्रिया की शुरूआत करने के लिए व्यक्तित्व (अहं) को बनाये रखने के सभी बहाने पूर्णरूप से समाप्त हो जाते हैं।

सत् अस्तित्व है । अनुभव केवल आभासित सत् है। जो कुछ आप अनुभव कर रहे हैं, वह अपने आप में इस बात का प्रमाण है कि आप जो अनुभव कर रहे हैं वह शाश्वत नहीं है। हजारों वर्षों से इस अद्भुत देश भारत के हजारों लोगों के खण्ड चैतन्य का उस परम अनाम अस्तित्व में विस्फोट हुआ और उन्हें पूर्ण चैतन्य की झलक मिली। उनका स्पन्दन आज भी विद्यमान है। उनका प्रभाव इस भूमि और यहाँ की हवा में महसूस किया जा सकता है।

भारतवर्ष कुछ विशि स्पन्दनों से स्पंदित है। इस सौभाग्य का दावा शायद कोई अन्य देश नहीं कर सकता है। यह एक काव्य है, केवल भूगोल या इतिहास नहीं। यह इन सबसे कहीं अधिक, कुछ अदृश्य, किन्तु बोधगम्य है। इस अद्भुत भूमि भारत को आवेष्ठित करने वाली अपरिमेय चैतन्य के साथ होने के लिए आपके पास क्रियायोग की समझदारी (स्वाध्याय), उद्यम (तापस) एवं परम विस्फोट (ईश्वर प्रणिधान) से उत्पन्न अन्तर्दृष्टि चाहिए।

ॐ भारत ॐ